हिन्दी

अध्याय-5: किस तरह आखिरकार मैं हिंदी में आया

SHIVOM CLASSES 8696608541

-शमशेर बहादुर सिंह

सारांश

इस कहानी के लेखक शमशेर बहादुर सिंह जी हैं।इस कहानी में लेखक ने अपने जीवन के उन तमाम घटनाक्रमों का जिक्र किया है जिसके फलस्वरूप उन्होंने हिंदी साहित्य जगत में कदम रखा और हिन्दी लेखन कार्य आरंभ किया और खूब सारी कविताएं, निबंध और कहानियां लिखकर प्रसिद्धि कमाई। अपने इस लेख में लेखक ने श्री हरिवंश राय बच्चनजी, सुमित्रानंदन पंतजी, निरालाजी का दिल से आभार प्रकट किया है।

कहानी की शुरुआत करते हुए लेखक शमशेर बहादुर जी कहते हैं कि वो जिस स्थिति में थे उसी स्थिति में अपने घर से पहली बस पकड़कर दिल्ली के लिए रवाना हो गए। दिल्ली पहुंच कर उन्होंने तय किया कि उन्हें कोई न कोई काम अवश्य करना है। इसीलिए वो अपनी इच्छानुसार पेंटिंग की शिक्षा लेने "उकील आर्ट स्कूल" पहुंचे। परीक्षा में सफल होने के कारण उन्हें बिना फीस दिए ही वहाँ प्रवेश मिल गया।

लेखक ने करोलबाग में सड़क किनारे एक कमरा किराए में लिया और वहीं से वो पेंटिंग सीखने कनाट प्लेस जाते थे। पेंटिंग क्लास जाने और आने के रास्ते में वो अपना अधिकतर समय कभी ड्राइंग बनाकर तो कभी कविताएं लिखकर गुजारा करते थे।

हालाँकि उन्हें इस बात का जरा भी आभास नहीं था कि कभी उनकी कविताएं प्रकाशित होगी। आर्थिक हालत अच्छे न होने के कारण कभी-कभी लेखक के बड़े भाई तेज बहादुर उन्हें कुछ रुपए भेज देते थे और कुछ रुपए लेखक स्वयं साइन बोर्ड पेंट करके भी कमा लेते थे।

कुछ समय बाद लेखक के एक तीस-चालीस वर्ष के महाराष्ट्रीयन पत्रकार मित्र उनके साथ आकर रहने लगे।लेखक उस वक्त कभी कविताएं और कभी उर्दू में गजल के कुछ शेर भी लिख लिया करते थे।

लेखक की पत्नी का देहांत टी.बी नामक बीमारी के कारण हो चुका था। इसीलिए वो अपने आप को बिल्कुल अकेला महसूस करते और दुखी रहते थे। पेंटिंग करना, कविताएं लिखना, उनका जीवन बस इन्हीं तक सीमित रह गया था।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

एक बार लेखक अपनी क्लास खत्म होने के बाद घर जा चुके थे। तब बच्चन जी उनके स्टूडियो में आए और लेखक को वहां ना पाकर उनके नाम एक नोट छोड़ कर चले गए। लेखक कहते हैं कि उनकी एक बहुत बुरी आदत थी कि वह कभी भी किसी के भी पत्रों का जवाब नहीं देते थे। लेकिन कुछ समय बाद उन्होंने बच्चन जी के लिए एक अंग्रेजी का सॉनेट लिखा। लेकिन वह उसे बच्चन जी को भेज नहीं पाए।

इसके बाद लेखक अपनी ससुराल देहरादून आ गए। जहां उन्होंने एक केमिस्ट की दुकान में कंपाउंडरी सीखी। और एक दिन अचानक उन्होंने अंग्रेजी में लिखा अपना वह सॉनेट बच्चन जी को भेज दिया।

बात सन 1937 की हैं जब बच्चनजी गर्मियों की छुट्टियों में देहरादून आए और बृज मोहन गुप्ता के यहां ठहरे। और फिर एक दिन वो बृज मोहन गुप्ता के साथ उनकी केमिस्ट की दुकान में आकर उनसे मिले। लेखक बताते हैं कि उस दिन मौसम खराब था और आँधी आने के कारण वो एक गिरते पेड़ के नीचे आते-आते बच गए।

इस छोटी सी मुलाकात में लेखक का बच्चन जी के साथ एक व्यवहारिक रिश्ता जुड़ गया था ।लेखक कहते हैं कि बच्चनजी की पत्नी का भी देहांत हो चुका था। इसीलिए वो भी बहुत दुखी रहते थे। उनकी पत्नी उनके सुख-दुख की संगिनी थी। वह विशाल हृदय की मलिक्का व बात की धनी महिला थी।

लेखक की मनोदशा देखकर बच्चनजी ने उन्हें इलाहाबाद आकर पढ़ने की सलाह दी और उनकी बात मान कर लेखक इलाहाबाद पहुंच गए। बच्चन जी ने लेखक को M.A में प्रवेश दिला दिया। इलाहाबाद में लेखक को बच्चनजी व उनके परिवार से बहुत सहयोग मिला। बच्चनजी के पिताजी ने लेखक को उर्दू-फारसी की सूफी नज्मों का एक संग्रह भी भेंट किया। बच्चनजी ने स्वयं भी M.A अंग्रेजी विषय से किया था लेकिन उन्होंने नौकरी नहीं की। लेखक का भी सरकारी नौकरी के प्रति कोई रुझान नहीं था। इसीलिए वो भी सरकारी नौकरी से दूर ही रहे।

लेखक आगे कहते हैं कि श्री सुमित्रानंदन पंतजी की सहायता से उन्हें “हिंदू बोर्डिंग हाउस” के कॉमन रूम में एक सीट फ्री मिल गई थी।और इसी के साथ ही उन्हें पंत जी की सहायता से “इंडियन प्रेस” में अनुवाद का काम भी मिल गया था।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

यहीं से लेखक ने हिंदी कविताओं व लेखन कार्य को गंभीरता से लेना आरंभ किया। लेखक के परिवार में उर्दू का माहौल होने के कारण उन्हें उर्दू का अच्छा ज्ञान था। लेकिन उनका हिंदी लिखने का अभ्यास बिल्कुल ही छूट चुका था।बच्चन जी की मदद से उन्होंने पुन: हिंदी लिखने में महारत हासिल की।

उनकी कुछ रचनाएं "सरस्वती" और "चाँद" में भी छप चुकी थी। "अभ्युदय" में छपा उनका एक "सॉनेट" बच्चन जी को बहुत पसंद आया। लेखक कहते हैं कि उन्हें पंतजी और निरालाजी ने हिंदी की ओर आकर्षित किया । अब बच्चनजी भी हिंदी में लेखन कार्य शुरू कर चुके थे।

लेखक को लगा कि अब उन्हें भी हिंदी में लेखन कार्य करने के लिए कमर कस लेनी चाहिए। लेखक लाख कोशिशों के बाद भी M.A. नहीं कर पाए जिसका बच्चनजी को बहुत दुख था।

लेखक ने अब हिंदी कवितायें लिखनी आरम्भ की और उनके प्रयास सार्थक भी हो रहे थे। "सरस्वती" पत्रिका में छपी लेखक की एक कविता ने निराला जी का ध्यान खींचा। इसी के साथ ही लेखक ने कुछ और निबंध भी लिखें।

लेखक के अनुसार उनके हिंदी साहित्य जगत में फलने फूलने के पीछे बच्चनजी का बहुत बड़ा योगदान रहा है।

लेखक कहते हैं कि बाद में वो निश्चित रूप से बच्चन जी से दूर ही रहे क्योंकि उन्हें चिट्ठी-पत्री तथा मिलने जुलने में अधिक विश्वास नहीं था लेकिन बच्चनजी हमेशा उनके बहुत निकट रहे।

लेखक कहते हैं कि बच्चनजी का व्यक्तित्व उनकी श्रेष्ठ कविताओं से भी बहुत बड़ा व अद्भुत है। बच्चनजी जैसे व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति इस दुनिया में कम ही होते हैं।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न-अभ्यास प्रश्न (पृष्ठ संख्या 58)

प्रश्न 1 वह ऐसी कौन सी बात रही होगी जिसने लेखक को दिल्ली जाने के लिए बाध्य कर दिया?

उत्तर- कवि शायद अपनी पत्नी की बीमारी से मृत्यु के कारण देहरादून से खिन्न हो चुका था या फिर घर वालों द्वारा कुछ ना करने के कारण उसको बुरा लगा। जिसके कारण वह बिना कुछ कहे घर से दिल्ली के लिए निकल गया।

प्रश्न 2 लेखक को अंग्रेज़ी में कविता लिखने का अफ़सोस क्यों रहा होगा?

उत्तर- लेखक को अंग्रेज़ी में कविता लिखने पर अफ़सोस इसलिए रहा होगा क्योंकि वह भारत की जन-भाषा नहीं थी। इसलिए भारत के लोग यानी उनके अपने लोग उसे समझ नहीं पाते होंगे।

प्रश्न 3 अपनी कल्पना से लिखिए कि बच्चन ने लेखक के लिए नोट में क्या लिखा होगा?

उत्तर- दिल्ली के उकील आर्ट स्कूल में बच्चनजी लेखक के लिए एक नोट छोड़कर गए थे। उस नोट में शायद उन्होंने लिखा होगा कि तुम इलाहाबाद आ जाओ। लेखन में ही तुम्हारा भविष्य निहित है। संघर्ष करने वाले ही जीवन पथ पर अग्रसर होते हैं अत: परिश्रम करो सफलता अवश्य तुम्हारे कदम चूमेगी।

प्रश्न 4 लेखक ने बच्चन के व्यक्तित्व के किन-किन रूपों को उभारा है?

उत्तर- लेखक ने बच्चन के व्यक्तित्व के अनेक रूपों को उभारा है–

i. बच्चन का स्वभाव संघर्षशील, परोपकारी, फौलादी संकल्पवाला था।
ii. बच्चनजी समय के अत्यंत पाबन्द होने के साथ-साथ कला-प्रतिभा के पारखी थे। उन्होंने लेखक द्वारा लिखे एक ही सॉनेट को पढ़कर उनकी कला– प्रतिभा को पहचान लिया था।
iii. बच्चनजी अत्यंत कोमल एवं सहृदय मनुष्य थे।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

iv. वे हृदय से ही नहीं, कर्म से भी परम सहयोगी थे। उन्होंने न केवल लेखक को इलाहाबाद बुलाया बल्कि लेखक की पढ़ाई का सारा जिम्मा भी उठा लिया।

प्रश्न 5 बच्चन के अतिरिक्त लेखक को अन्य किन लोगों का तथा किस प्रकार का सहयोग मिला?

उत्तर- लेखक को बच्चन के अतिरिक्त निम्नलिखित लोगों का सहयोग प्राप्त हुआ–

तेजबहादुर सिंह: ये लेखक के बड़े भाई थे। ये आर्थिक तंगी के दिनों में उन्हें कुछ रूपये भेजकर उनका सहयोग करते थे।

कवि नरेंद्र शर्मा: कवि नरेंद्र शर्मा लेखक के मित्र थे। एक दिन वे लेखक से मिलने के लिए बच्हन स्टूडियो में आये। छुट्टी होने कारण लेखक नहीं मिल सका। तब वे उनके नाम एक बहुत अच्छा और प्रेरक नोट छोड़ गए। इस नोट ने लेखक को बहुत प्रेरणा दी।

शारदाचरण उकील: ये कला शिक्षक थे। इनसे लेखक ने पेंटिंग की शिक्षा ली।

बच्चन के पिता: जब लेखक इलाहाबाद में आकर बस गया तो उन्हें स्थानीय अभिभावक की आवश्यकता थी। तब हरिवंशराय बच्चन के पिता ने उनका अभिभावक बन्ना स्वीकार किया।

सुमित्रानंदन पंत: हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत ने लेखक को इंडियन प्रेस से अनुवाद का काम दिला दिया। उन्होंने लेखक द्वारा लिखी कविताओं में कुछ संशोधन भी किया।

ससुराल पक्ष: जिन दिनों विधुर लेखक आजीविका कमाने के लिए संघर्ष कतर रहा था, तब ससुराल वालों ने उन्हें अपनी दुकान पर कम्पाउंडरी का प्रशिक्षण दिया।

प्रश्न 6 लेखक के हिंदी लेखन में कदम रखने का क्रमानुसार वर्णन कीजिये।

उत्तर-

- मित्रों के सहयोग, इलाहाबाद का संस्कार तथा हिन्दी कविता का वातावरण और प्रोत्साहन पाकर लेखक हिन्दी में रचनाएँ करने लगे।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

- सन 1933 में लेखक की कुछ कविताएँ 'सरस्वती' व 'चाँद' पत्रिका में छपीं।
- 1937 में लेखक ने बच्चन जी के बताए अनुसार 14 पंक्तियों की कविता को लिखने का प्रयास किया।
- लेखक ने 'निशा निमंत्रण के कवि के प्रति' एक कविता लिखी जिस पर पंत जी के कुछ संशोधन भी हुए, पर अप्रकाशित रही।
- फिर लेखक 'रूपाभ' के आफिस में प्रशिक्षण लेकर बनारस से प्रकाशित 'हंस' के कार्यालय में काम सँभाला।

प्रश्न 7 लेखक ने अपने जीवन में जिन कठिनाइयों को झेला है, उनके बारे में लिखिए।

उत्तर- पाठ पढ़ने पर हमें लेखक के जीवन की कठिनाईयों के बारे में पता चलता है–

- बेरोजगारी के दिनों में व्यंग बाणों को झेलना पड़ता था। लेखक को अपने प्रारम्भ के दिनों में आर्थिक समस्याओं से जूझना पड़ा था। साइन बोर्ड पेंट करके अपना गुजारा चलाना पड़ता था।
- लेखक की पत्नी का टी.बी. के कारण देहांत हो गया था, और वे युवावस्था में ही विधुर हो गए। इसलिए उन्हें पत्नी– वियोग की पीड़ा को भी झेलना पड़ा।
- बच्चनजी आग्रह पर जब वे इलाहाबाद आए तब भी वे आर्थिक समस्या से जूझ रहे थे। बच्चनजी ने उनकी पढ़ाई का सारा खर्चा उठाया था।

इस प्रकार उनके प्रारम्भ के दिन आर्थिक कठिनाईयों में बीते।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)